भोर का उजास

सतीशचन्द्र 'सतीश'

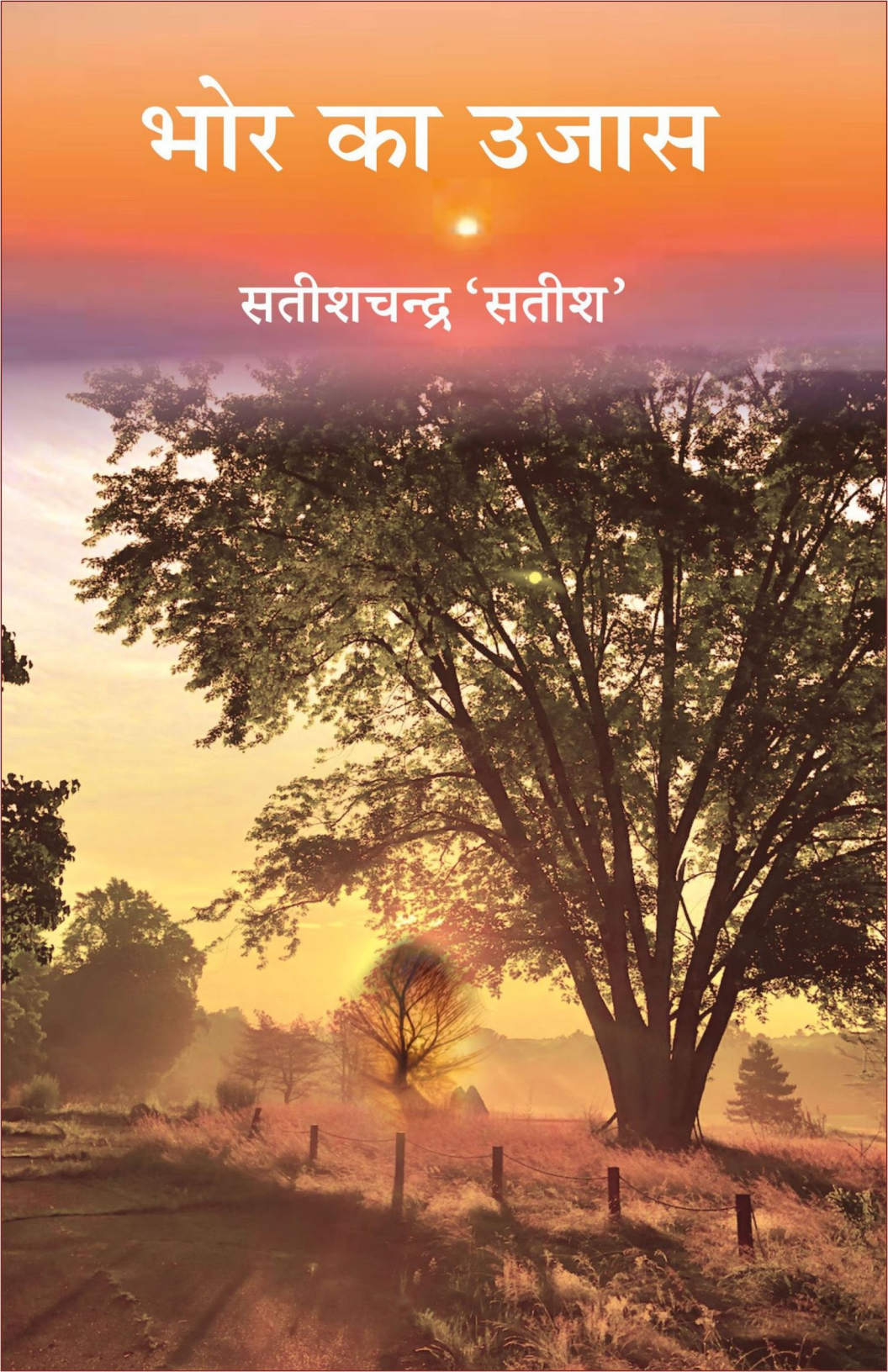

भोर का उजास

(कहानी-संग्रह)

भोर का उजास

(कहानी-संग्रह)

सतीशचन्द्र 'सतीश'

अनुज्ञा

वैधानिक चेतावनी

पुस्तक के किसी भी अंश के प्रकाशन, फोटोकॉपी, इलेक्ट्रॉनिक माध्यमों में उपयोग के लिए लेखक व प्रकाशक की लिखित अनुमति आवश्यक है। पुस्तक में प्रकाशित आलेख/आलेखों के सर्वाधिकार मूल रचनाकार/रचनाकारों के पास सुरक्षित हैं। पुस्तक में व्यक्त विचार पूर्णतया लेखक/लेखकों अथवा संपादक/संपादकों के हैं। यह जरूरी नहीं है कि प्रकाशक इन विचारों से पूर्ण या आंशिक रूप से सहमति रखे। किसी भी विवाद के लिए न्यायालय, दिल्ली ही मान्य होगा।

© लेखक

प्रथम संस्करण : 2024

ISBN 978-81-19878-84-0

प्रकाशक

अनुज्ञा बुक्स

1/10206, लेन नं. 1E, वेस्ट गोरख पार्क, शाहदरा, दिल्ली-110 032

e-mail : anuugyabooks@gmail.com • salesanuugyabooks@gmail.com

फोन : 011-45506552, 7291920186, 9350809192

www : anuugyabooks.com

आवरण

राधेश्याम प्रजापति

मुद्रक

अर्पित प्रिंटोग्राफर्स, दिल्ली-32

BHOR KA UJAS

*Collection of stories by **Satishchanra 'Satish'***

लेखकीय पूर्व कथन

'भोर का उजास' कहानी-संग्रह में कुल सत्तरह कहानियाँ संकलित हैं। कविता के साथ जीवनसम्वेदनाओं ने कभी-कभी कहानियों के रूप में भी, स्वयं को अभिव्यक्त किया है। कुछ कहानियाँ पत्रिकाओं में प्रकाशित भी होती रहीं, जिनमें सामर्थ्य, अक्षरालोक, प्रबोधिका, भग्न भावनायें, आदि प्रमुख हैं। इस संकलन की भी 'मैं नहीं डरती' सामर्थ्य में, 'फट गया खोल' और 'एक टाँग की चिड़िया' अक्षरालोक में प्रकाशित हो चुकी हैं। संकलन के रूप में यह लेखक का प्रथम संकलन पाठकों के समक्ष प्रस्तुत है। लेखक की किसी भी कृति के सर्वश्रेष्ठ समीक्षक तो पाठक ही होते हैं, अत: पाठकों द्वारा खुले हृदय से की गयी समीक्षा का स्वागत है।

पुस्तक के प्रकाशन में जहाँ मेरे पुत्र विजय गंगवार एडव्होकेट का योगदान है, वहीं सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण भूमिका तो कथकार श्री हरियश राय जी की रही है, जिनका आभार प्रकट करते हुए मैं बताना चाहता हूँ कि यदि उनसे मेरा संपर्क न हुआ होता तो कहानियाँ पुस्तकाकार रूप में पता नहीं कब सामने आ पातीं, साथ ही उन्होंने प्रकाशक और मेरे बीच एक पुल की भूमिका का निर्वाह करते हुए, भागदौड़ के सारे श्रम से मुझे मुक्ति प्रदान की है। इन्हीं शब्दों के साथ, पाठकों की प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा में ...

सतीशचन्द्र 'सतीश'
9838781071

अनुक्रम

लेखकीय पूर्व कथन 5

- गौरी 9
- कोई रिश्ता तो बचा है 20
- फट गया खोल 32
- गुटरगूँ 39
- मैं नहीं डरती 47
- कौन संभालेगा 52
- सीढ़ी टूट रही है 59
- चिकित्सा चक्र 68
- अनार 80
- भोर का उजास 84
- कितने अवरोध 90
- पेशाब घर 96
- हट ही गया 103
- सूखे पत्ते 109
- एक टाँग की चिड़िया 116
- इमरान भाई 120
- पाले हुए भेड़िये 126

गौरी

वह घर के दरवाजे के सामने पड़े चबूतरे के घर की ओर वाली कोर पर दीवार से चार अंगुल छोड़ खुरपी से गड्ढा खोदने की सही जगह का हिसाब लगाने लगी, दरवाजे से दक्षिण ओर दो हाथ दूर पर उसने अपने विकलांग पति की ओर देखते हुए पैर का पंजा रखते हुए कहा, 'यहाँ पर खोदें'।

पति ने निगाह गढ़ाते हुए उस स्थान को और दीवार के अंत तक नजर डाल कर परामर्श दिया, नाँद भी तो बनानी पड़ेगी, तो उसके लिए भी डेढ़ हाथ जगह तो छोड़ना ही है, फिर वह बढ़ेगी भी तो अगली साल ही तो उसके खड़े होने को चार हाथ जगह चाहिए होगी।

स्त्री ने चबूतरे को नजर घुमाकर देखा, जो दरवाजे के सामने तो दस-ग्यारह फुट चौड़ा है भी किन्तु गली के मोड़ के साथ ही दूसरी ओर तो पाँच फुट ही चौड़ा रह गया है, वैसे मकान के साथ लम्बाई तो बीस फुट तक है वह तीन हाथ और दक्षिण की तरु हटी, दीवार से नाँद जमाने भर की जमीन छोड़ खुरपी की नोंक से निशान बनाती हुई बोली, खूँटा यहाँ सही रहेगा। उसने पति की स्वीकृति हेतु उसकी ओर ताका।

यहीं पर गाढ़ दो, पति ने दो फुट लम्बी-मोटी लकड़ी जिसके एक सिरे को बढ़ई से नुकीला करवाकर लाया था, लँगड़ाते हुए वहाँ पहुँच उस निशान पर नोक रक्खी, लकड़ी के किनारे जमीन को छूते हुए उँगली घुमाई, इतना चौड़ा खोद दो, वालिप्त भर ही गहरा करना इसके बाद तो इसे ठोंक कर ही गाढ़ना है।

पत्नी ने गड्ढा खोदा, पति ने खूँटे को उसमें रख एक खंजड़ ईंट से उस पर चोट कर करके छः इंच तक गाढ़ दिया, किनारों पर ईंट के छोटे-छोटे टुकड़े, लकड़ी के एक डंडे से ठोंक-ठोंक मिट्टी ठूँस दी।

खूँटे को दोनों ने एक-एक बार हिलाने को जोर लगाया ऊपर खींचकर देखो, खूँटे की मजबूती से आश्वस्त हो दोनों की आँखों में वही उल्हास कौंधा